Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 17, Issue No. 2, October-2020, ISSN 2230-7540

महिलाओं में SHG के माध्यम से उद्यमशीलता का विकास एवं आर्थिक एवं सामाजिक उत्थान

राजेन्द्र प्रसाद पटेल[1]*, डॉ. एस. डी. पाण्डेय[2]

[1] शोधार्थी, अवधेश प्रताप सिंह विवि, रीवा (मप्र)

[2] निर्देशक, शासकीय केदारनाथ स्नातकोत्तर महाविद्यालय, मऊगंज, जिला रीवा (मप्र)

सार - *भारत की 71.2 प्रतिशत आबादी गांवों में रहती है। इसका लगभग आधा भाग महिलाओ का है। महिलाओं का राष्ट्रीय विकास की गतिविधियों में अत्यंत महत्वपूर्ण योगदान है। परन्तु , महिलाओं की भूमिका अभी तक परदे के पीछे रही है। यही कारण है कि इन्हें समुचित रूप से मान्यता नहीं मिल पाई है। महिला सशक्तिकरण का मुद्दा केवल भारत का ही विषय नहीं है वरन् विश्व के सभी देशों में यह चिंतनीय मुद्दा है। संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा 8 मार्च 1975 को अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस की शुरूआत की गई थी। इसके पश्चात् संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा अनेक विश्व महिला सम्मेलनों का सफलतापूर्वक आयोजन किया गया है। महिला उत्थान व सशक्तिकरण की दिशा में वियना में मानवाधिकारों के विश्व सम्मेलन 1993 में महिला अधिकारों को मानवाधिकार के रूप में स्वीकृति मिली। महिलाओ की स्थिति ही देश के विकास को सूचित करती है। इसलिए इनको सशक्त बनाने की जरूरत है। इन्हें इतना मजबूत बनना होगा कि वे अपने जीवन में व्यक्तिगत व सामाजिक निर्णय लेने में सक्षम हो जाएं। जिन महिलाओं को उनकी वर्तमान आर्थिक स्थिति के कारण कोई वित्तीय सहायता नहीं मिलती है , उन्हें एसएचजी में शामिल होने पर वित्तीय सहायता मिलती है। पहले अपना व्यवसाय शुरू करने के लिए धन प्राप्त करना कठिन था लेकिन अब , के माध्यम से , सूक्ष्म वित्त निधि प्राप्त करना बहुत आसान हो गया है। जो महिलाएं गरीब हैं और अपने जीवन में बहुत सी कठिनाइयों को देखा है , वे अपने बच्चों को एक बेहतर जीवन शैली देने के लिए तैयार हैं और उन्हें पता है कि परिवार के एक सदस्य द्वारा अर्जित आय पर्याप्त नहीं होगी। महिलाएं आर्थिक रूप से अधिक उत्पादक बनने की कोशिश कर रही हैं। दिए गए आंकड़ों से यह भी अनुमान लगाया गया है कि 26 से 35 आयु वर्ग की महिलाएं स्वयं सहायता समूह के व्यवसाय में शामिल होना पसंद करती हैं। यह अनुशंसा की जाती है कि अन्य आयु वर्ग की गरीब महिलाओं को भी स्वयं सहायता समूह में शामिल होने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।*

कुंजीशब्द - *उद्यमशीलता, आर्थिक एवं सामाजिक, उत्थान, महिलाओं*

----------X----------

1. प्रस्तावना

मध्य प्रदेश में महिला सशक्तिकरण पैटर्न पर प्रभाव

माइक्रोफाइनेंस वितरण एजेंसियों और उपकरणों के एक नए सेट के माध्यम से लोगों को दिया गया क्रेडिट का एक छोटा स्रोत है और सिस्टम और मानकों का एक नया सेट गरीबों , किसानों, ग्रामीण निर्माताओं और छोटे कारीगरों को क्रेडिट सिस्टम प्रदान करने की प्रमुख रणनीति बन गया है। ग्रामीण महिलाओं के जीवन स्तर को बढ़ाने और संस्थागत ऋण तक महिलाओं की पहुंच बढ़ाने के लिए, नाबार्ड ने ग्रामीण महिलाओं के ग्रामीण गैर-कृषि उत्पादों (माहिमा) में ग्रामीण महिलाओं की सहायता जैसी विभिन्न योजनाएं और कार्यक्रम तैयार किए हैं।

वित्तीय स्थिति के मामले में महिलाओं के सामान्य स्तर में सुधार के लिए मध्य प्रदेश में पांच सहित देश

में सौ बैंकों को अनुदान सहायता में भी वृद्धि हुई। डीसीसीबी और आरआरबी के माध्यम से उदार शर्तों पर ऋण की विशेष लाइनें भी स्थापित की गई हैं , जो आदिवासी बहुल क्षेत्रों में काम कर रहे हैं , जिसका उद्देश्य जनजातीय लोगों के लिए ऋण स्थापित करना है। ग्रामीण क्षेत्रों में गरीबी रेखा से नीचे जीवन यापन करने वाली महिलाओं के मानकों में सुधार के लिए अल्पकालिक ऋण सीमा भी स्वीकृत की जाती है।

अनुसूचित जाति के लिए मध्य प्रदेश जिला अंत्यवसायी शकी विकास समिति और एसटी के लिए आदिवासी विट्टा इवान विकास निगम के दायरे में अनुसूचित जाति / अनुसूचित जनजाति आबादी के आय सृजन और रोजगार के लिए कई क्रेडिट-लिंक्ड योजनाएं चलाई जा रही हैं। महिला सशक्तिकरण के लिए विभिन्न बैंकों द्वारा चलाए जा रहे क्रेडिट घटक के साथ विभिन्न योजनाएं शुरू की गई हैं। मध्य प्रदेश में महिला सशक्तिकरण के लिए कुछ योजनाएं है।

1. स्वर्णजयंती ग्राम स्वरोजगार योजना (एसजीएसवाई)

यह एक क्रेडिट-लिंक्ड सब्सिडी योजना है जो स्वयं सहायता सदस्यों के लिए एक समूह दृष्टिकोण पर जोर देती है, जिससे ग्रामीण क्षेत्रों में सूक्ष्म उद्यमों की स्थापना होती है। 5 यह स्वरोजगार के सभी पहलुओं में बीपीएल के तहत रहने वाले परिवारों की सहायता करता है , जैसे स्वयं सहायता समूहों के संगठन के रूप में , और सरकारी सब्सिडी और बैंक ऋण के मिश्रण के माध्यम से आय-सृजित संपत्ति के प्रावधान के रूप में।

2. प्रधानमंत्री रोजगार योजना (PMRY)

यह योजना छोटे व्यवसायों के लिए 1 लाख और उद्योग या सेवा क्षेत्रों में स्वरोजगार के लिए 2 लाख की सीमा तक स्वरोजगार के लिए क्रेडिट प्रदान करती है। माइक्रोफाइनेंस भी समाज के सबसे गरीब वर्ग के लिए दृष्टिकोण बढ़ा रहा है।

3 स्वर्ण जयंती शैरी रोजगार योजना (SYSRY)

यह क्रेडिट लिंक्ड सब्सिडी योजना ग्रामीण क्षेत्रों के गरीब युवाओं के लिए है , जिन्होंने नौवीं कक्षा तक शिक्षा प्राप्त की है। ग्रामीण क्षेत्रों में अधिकांश छात्राएं अपनी पढ़ाई जारी नहीं रख सकीं क्योंकि विभिन्न कारकों के कारण यह उन महिलाओं के लिए एक बहुत ही उपयोगी योजना है जो अपना स्वयं का रोजगार संसाधन शुरू करना चाहती हैं।

4 मध्य प्रदेश आदिवासी वित्त एवं विकास सहयोग

यह योजना विशेष रूप से आदिवासी आबादी के उत्थान के लिए बनाई गई थी। इस योजना का सीधा लाभ आदिवासी क्षेत्रों में रहने वाली महिलाओं को मिल सकता है।

संहिता का माइक्रोफाइनेंस कार्यक्रम संहिता के आर्थिक कार्यक्रमों के पूरे सेट के बीच प्रवेश स्तर का हस्तक्षेप है। यह गरीब से गरीब व्यक्ति को, विशेष रूप से मध्य भारत के सुदूर क्षेत्रों में , वित्तीय समावेशन सेवाओं के साथ जोड़ने का कार्य करता है।

सूक्ष्म वित्त के बारे में जागरूकता

अध्ययन के दौरान , यह पाया गया कि माइक्रोफाइनेंस कार्यक्रम के लाभार्थियों के बारे में जानकारी मुख्य रूप से गैर सरकारी संगठनों द्वारा प्रदान की गई थी। तालिका 5.3 दर्शाती है कि विभिन्न हितधारकों से लाभार्थियों को सूक्ष्म वित्त के बारे में कैसे पता चला। यह पाया गया कि 90 (51.42 प्रतिशत) उत्तरदाताओं ने बताया कि उन्हें गैर सरकारी संगठनों द्वारा एमएफ गतिविधियों के बारे में पता चला।

तालिका 1 लाभार्थियों को सूक्ष्म वित्त संचालन के बारे में सूचना का प्रसार

सूक्ष्म वित्त की जानकारी	आवृत्ति	प्रतिशत
रिश्तेदारों	15	8.57
मित्र	24	13.71
सरकारी अधिकारी	46	26.28
एनजीओ	90	51.42

इसका कारण जैसा कि सभी अनुमान लगाया जा सकता है, माइक्रोफाइनेंस के बारे में जानकारी फैलाने में गैर सरकारी संगठनों की अधिक भागीदारी है। इच्छित लाभार्थियों को सूचित करने के लिए विभिन्न हितधारक भी शामिल हैं। मध्य प्रदेश सरकार सूक्ष्म वित्त कार्यक्रम में शामिल हो जाती है जिसके प्रसार के साथ ; स्वर्णजयंती ग्राम स्वरोजगार योजना (एसजीएसवाई) 1999 में ग्रामीण क्षेत्रों में माइक्रोफाइनेंस विकसित करने के उद्देश्य से शुरू की गई थी , जिससे बीपीएल परिवारों से संबंधित ग्रामीण गरीबों की क्षमता का निर्माण हुआ।

इस योजना के तहत , लाभार्थियों को व्यक्तिगत स्तर के साथ-साथ स्वयं सहायता समूहों (एसएचजी) को अपने स्वयं के उद्यम स्थापित करने के लिए ऋण और सब्सिडी दोनों के रूप में वित्तीय सहायता प्रदान की जाती है।

बैंकों ने भी माइक्रोफाइनेंस के बारे में जानकारी फैलाने के लिए सक्रिय रूप से काम करना शुरू कर दिया है ताकि प्राथमिकता वाले क्षेत्र को वित्तपोषित करने और लोगों को शामिल करने की उनकी जरूरतों को पूरा किया जा सके। मध्य प्रदेश में माइक्रोफाइनेंस के विकास के लिए वर्तमान में चल रही विभिन्न अन्य सब्सिडी योजनाएं हैं स्वर्ण जयंती शहरी रोजगार योजना (एसजेएआरवाई) , प्रधान मंत्र रोजगार योजना (पीएमआरजे) , खादी ग्राम और उद्योग आयोग (केवीआईसी) की मार्जिन मनी योजना नाबार्ड की भूमिका प्रशंसनीय है जहां तक लाभार्थियों को सूचित करने की बात है, वे स्वयं सहायता समूहों को बैंकों से जोड़ने के लिए गैर-सरकारी संगठनों का आर्थिक रूप से समर्थन करते हैं।

यह गैर सरकारी संगठनों से बहुत प्रभावित हुआ है क्योंकि इससे उन्हें स्वयं सहायता समूहों को जोड़ने के लिए परिचालन खर्चों को कवर करने में मदद मिलती है। माइक्रोफाइनेंस गरीब और कम आय वाले ग्राहकों को प्रदान करने वाली वित्तीय सेवाओं को संदर्भित करता है। इसमें क्रेडिट , बीमा, बचत, फंड ट्रांसफर आदि सहित सेवाओं की पूरी श्रृंखला शामिल है। माइक्रोफाइनेंस गतिविधियों के बारे में जागरूकता के बारे में उत्तरदाताओं से पूछा गया कि वे एमएफ की विभिन्न सेवाओं के बारे में कितने जागरूक हैं।

रीवा जिला और सूक्ष्म वित्त का आकार

भारतीय अर्थव्यवस्था में गरीबी , बेरोजगारी, आर्थिक, सामाजिक असमानता एक प्रमुख समस्या है। देश की आबादी का लगभग 50ः हिस्सा महिलाओं का है। विगत कुछ दशकों में महिलाओं की हिस्सेदारी में व्यापक वृद्धि हुई है।" महिलाऐं वर्तमान में आत्मनिर्भर सामाजिक एवं आर्थिक उत्थान हुआ है। किन्तु ग्रामीण क्षैत्रों में विशेषकर आदिवासी महिलायें आर्थिक एवं सामाजिक दृष्टि से आज भी पिछड़ी हुई दशा में है।

आदिवासी ग्रामीण महिलाऐं मुख्य रूप से कृषि कार्य ही करती है। कम मजदूरी एवं अधिक श्रम के कारण इनकी आर्थिक व सामाजिक स्थिति दयनीय रहती है। समाज एवं राष्ट्र की प्रगति के लिए नारी शक्ति का विशेष महत्व है। देश का वास्तविक विकास महिलाओं के विकास पर ही निर्भर करता है। केन्द्र सरकार एवं की राज्य सरकारों ने महिलाओं के आर्थिक सुधार एवं सामाजिक विकास हेतु अनेक प्रयास किए है।

इसके अन्तर्गत "सूक्ष्म वित्त" एक महत्वपूर्ण प्रयास है।" सम्पूर्ण विश्व में सूक्ष्म वित्त व्यवस्था को निर्धनता उनमूलन के एक सबल विकासात्मक आधार के रूप में माना जा रहा है। नाबार्ड के विशेष प्रयास से सर्वाधिक निर्धनता विशेषकर ग्रामीण महिलाओं में आथर्◌िक-सामाजिक सशक्तिकरण हुआ है। अतः महिलाएं आत्मनिर्भर एवं स्वावलंबी हुई है।"

सूक्ष्म वित्त सूक्ष्म बचतों, सूक्ष्म बीमा, सूक्ष्म विश्लेषण, सूक्ष्म पेंशन एवं आजिविका से संबंधित है। इसके सतत् विकास से ही भारत के ग्रामीण गरीबों का समूचित आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक सशक्तिकरण हुआ है। सूक्ष्म वित्त के अंतर्गत महिलाऐं स्वयं आत्मनिर्भर होकर, स्वयं की अभिरूचि के अनुसार व्यवसाय संचालित करती है।" सूक्ष्म वित्त वित्तीय सेवाओं की एक शाखा होती है, जो कि लोगों की व्यक्तिगत उपभोग, उत्पादन अथवा गतिविधियाँ, व्यवसाय आदि हेतु वित्त प्रदान करती है। देहा में सूक्ष्म वित्त के द्वारा विशेषकर ग्रामीण महिलाओं को "स्वयं सहायता समूह" के माध्यम से जोड़कर उनका आर्थिक एवं सामाजिक उत्थान किया गया है। सूक्ष्म वित्त के द्वारा ग्रामीण क्षैत्रों में गैर कृषि व्यवसाय संचालित किए है। धार जिले के ग्रामीण क्षैत्रों में महिलाओं का "सूक्ष्म वित्त संस्थाओं" के माध्यम से आर्थिक विकास किया गया है।

2. एसएचजी के माध्यम से ऋण आपूर्ति

मध्य प्रदेश में एसएचजी की कुल संख्या 1.63 लाख है, जिनमें से 2012 में दोनों निम्न आय वर्ग के तहत अनुमानित समूहों की संख्या 1.04 लाख है और 2017 में बढ़कर 2.58 लाख होने का अनुमान है।

रीवा जिले नें बैंकों ने 2012 में लगभग 6ः समूहों को ऋण दिया, जो कि $ 1.36-2.16 आय वर्ग से लगभग 5ः परिवारों को ऋण प्राप्त हुआ था। इस आधार पर , 2013 में एक छोटी सी वृद्धि का अनुमान है , यानी ढ$ 1.35 श्रेणी से 10ः और $ 1.36-2.16 द्वारा 20ः

2014 और 2015 में यह वृद्धि क्रमशः 20ः और 30ः करने की उम्मीद है कि नाबार्ड जैसी एजेंसियों से समर्थन समूहों की गुणवत्ता में सुधार के लिए एसएचपीआई को बढ़ाया जाएगा , और एमपीएसआरएलएम ने राज्य में कमजोर समूहों की क्षमता का निर्माण किया होगा , जो अनुमति देते हैं गरीब परिवारों को बैंकों से ऋण प्राप्त करने के लिए। जैसा कि पहले कहा गया है , यहां मुख्य धारणा यह है कि बैंकों ने 2014-15 तक अपने ऋणों की आपूर्ति में सुधार किया होगा। 2017 तक परिवारों की ऋण तक पहुंच में वृद्धि क्रमशः ढ$ 1.35 और 1.36-2.16 श्रेणियों द्वारा 50ः और 60ः तक पहुंच जाएगी।

3. अध्ययन के उद्देश्य

1. एसएचजी के माध्यम से ऋण आपूर्ति का अध्ययन
2. मध्य प्रदेश में महिला सशक्तिकरण पैटर्न पर प्रभाव का अध्ययन

4. अनुसन्धान क्रियाविधि

द्वितीयक स्रोत विभिन्न संसाधनों जैसे पुस्तकों , शोध पत्रिकाओं, इंटरनेट, पत्रिका और समाचार पत्रों में साहित्यिक कॉलम से संचित किया गया है।

5. डाटा विश्लेषण

आवृत्ति वितरण और प्रतिशत

(ए) स्वयं सहायता समूह (एसएचजी) द्वारा किए गए व्यवसाय का प्रकार

तालिका 2 स्वयं सहायता समूह (एसएचजी) द्वारा किए गए उद्योगों ? व्यवसाय का प्रकार एवं उन्हें बढ़ावा देना

		आवृत्ति	प्रतिशत	मान्य प्रतिशत	संचित प्रतिशत
वैध	इत्र बनाना	2	.4	.4	.4
	पेपर बैग बनाना	19	3.6	3.6	4.0
	कृत्रिम मोती बनाना	76	14.5	14.5	18.5
	किराना दुकान की स्थापना	61	11.6	11.6	30.2
	मोमबत्ती बनाना	24	4.6	4.6	34.7
	चपाती भाजी केंद्र	142	27.1	27.1	61.8
	जेरोक्स मशीन चलाना	46	8.8	8.8	70.6
	सिलाई	44	8.4	8.4	79.0
	फिनाइल और तरल साबुन बनाना	23	4.4	4.4	83.4
	कृत्रिम आभूषण बनाना	10	1.9	1.9	85.3
	अगरबत्ती बनाना (अगरबत्ती)	12	2.3	2.3	87.6
	फूल बनाना	11	2.1	2.1	89.7
	पेंटिंग और एम्बॉसिंग	10	1.9	1.9	91.6
	खाद्य वस्तुओं	28	5.3	5.3	96.9
	अन्य	16	3.1	3.1	100.0
	कुल	524	100.0	100.0	

साधारण आवृत्ति गणना से, यह देखा गया है कि 524 के कुल नमूने में से 142 महिलाएं चपाती भाजी बनाने का व्यवसाय करना पसंद करती हैं जो कुल का 27.1% है। 76 महिलाएं कृत्रिम मोती बनाने से संबंधित व्यवसाय करना पसंद करती हैं और वे 14.5% हैं जबकि 5.3% खाद्य पदार्थ बनाने से संबंधित व्यवसाय करना पसंद करते हैं। कुल 524 नमूनों में से 10 नमूने पेंटिंग और एम्बॉसिंग यानी 1.9% पसंद करते हैं और केवल 2 ही इत्र बनाने वाले व्यवसाय को पसंद करते हैं। अतरू स्वयं सहायता समूह (एसएचजी) द्वारा किए गए उद्योगों ? व्यवसाय का प्रकार एवं उन्हें बढ़ावा देता है।

(बी) प्रश्नावली में सूचीबद्ध लाभ कारकों का मूल्यांकन जिसमें लाभ कारक शामिल हैं।

1. एसएचजी वित्तीय और सामाजिक सहायता प्रदान करते ह Sa ¼p&f&and&ss½]
2. एसएचजी आत्म-सम्मान (बिल्डिंग-सेल्फ-सम्मान) के निर्माण के लिए सहायक हो सकता है,
3. एसएचजी में शामिल होने के बाद , पैसा बचाना और आय उत्पन्न करना संभव है (बाद-जनरेटिंग-मनी),
4. एसएचजी एसेट बिल्डिंग (एसेट बिल्डिंग) के लिए मददगार है
5. समूह में महिलाएं वित्तीय पहलुओं में एक-दूसरे पर भरोसा करती हैं, (विश्वास सम्मान)
6. एसएचजी महिलाओं को एक साथ आने और उनके सुख-दुख साझा करने में मदद करता है , (खुशी पर चर्चा करें)
7. एसएचजी उन्हें सशक्त महसूस कराता है , (सशक्त महसूस करता है)
8. SHG उन्हें एक साथ काम करने के महत्व और टीम वर्क के लाभों को समझने में मदद करता है।] (imp&working&together)

9. वे जानते हैं कि बेहतर जीवन स्तर अर्जित करने के लिए परिवार में पुरुषों के साथ महिलाओं को भी कमाना पड़ता है।
10. परिवार के सदस्य एसएचजी में शामिल होने के लिए महिलाओं का समर्थन करते हैं। (f&member&support)

ऐसे कारक जो महिलाओं को एसएचजी में शामिल होने में मदद करने वाले या प्रेरित करने वाले सबसे अधिक और कम से कम महत्वपूर्ण लाभ कारकों की पहचान करने में मदद करते हैं।

तालिका 3 सूक्ष्म वित्त गरीबी उन्मूलन ए वित्तीय और सामाजिक सहायता प्रदान करता है

		आवृत्ति	प्रतिशत	मान्य प्रतिशत	संचित प्रतिशत
वैध	दृढ़तापूर्वक असहमत	69	13.2	13.2	13.2
	असहमत	88	16.8	16.8	30.0
	कुछ हद तक असहमत	71	13.5	13.5	43.5
	तटस्थ	88	16.8	16.8	60.3
	थोड़ा सहमत	53	10.1	10.1	70.4
	सहमत	103	19.7	19.7	90.1
	दृढ़तापूर्वक सहमत	52	9.9	9.9	100.0
	कुल	524	100.0	100.0	

उपरोक्त तालिका से, यह देखा गया है कि 19.7% सहमत हैं कि एसएचजी उन्हें वित्तीय और सामाजिक सहायता प्रदान करते हैं। और , 13.2% इस बात से पूरी तरह असहमत हैं कि एसएचजी महिलाओं को एसएचजी में शामिल होने के लिए कोई वित्तीय और सामाजिक सहायता प्रदान करता है । अतरू सूक्ष्म वित्त गरीबी उन्मूलन ए वित्तीय और सामाजिक सहायता प्रदान करता है।

तालिका 4 एसएचजी स्वाभिमान के निर्माण में सहायक हो सकता ह

		आवृत्ति	प्रतिशत	मान्य प्रतिशत	संचित प्रतिशत
वैध	असहमत	69	13.2	13.2	13.2
	कुछ हद तक असहमत	174	33.2	33.2	46.4
	तटस्थ	122	23.3	23.3	69.7
	थोड़ा सहमत	71	13.5	13.5	83.2
	सहमत	70	13.4	13.4	96.6
	दृढ़तापूर्वक सहमत	18	3.4	3.4	100.0
	कुल	524	100.0	100.0	

उपरोक्त तालिका से , यह देखा गया है कि 33.2% महिलाएं कुछ हद तक इस बात से असहमत हैं कि एसएचजी में शामिल होने से उन्हें अपना आत्म-सम्मान बनाने में मदद मिलती है और केवल 3.4% इस बात से दृढ़ता से सहमत हैं कि एसएचजी में शामिल होने से उनके आत्म-सम्मान का निर्माण होता है।

(डी) एसएचजी में शामिल होने के लिए प्रोत्साहन का स्रोत

तालिका 5 सूक्ष्म वित्त के उपयोग हेतु समयबद्ध कार्यक्रम एवं एसएचजी में शामिल होने के लिए प्रोत्साहन का स्रोत

		आवृत्ति	प्रतिशत	मान्य प्रतिशत	संचित प्रतिशत
वैध	NGO	107	20.4	20.4	20.4
	राजनीतिक दलों	122	23.3	23.3	43.7
	अन्य महिलाएँ	52	9.9	9.9	53.6
	मित्र	87	16.6	16.6	70.2
	रिश्तेदार	52	9.9	9.9	80.2
	सामाजिक कार्यकर्ता	69	13.2	13.2	93.3
	अन्य	35	6.7	6.7	100.0
	कुल	524	100.0	100.0	

उपरोक्त से यह देखा गया है कि 23.3% महिलाओं को राजनीतिक दलों से प्रोत्साहन मिलता है , 20.4% को गैर सरकारी संगठनों से प्रोत्साहन मिलता है और केवल 6.7% को अन्य स्रोतों से प्रोत्साहन मिलता है।% अतरू सूक्ष्म वित्त के उपयोग हेतु समयबद्ध कार्यक्रम कार्यक्रम एवं एसएचजी में शामिल होने के लिए प्रोत्साहन मिलता है।

6. उपसंहार

महिलाओं में यह सशक्तिकरण विभिन्न कारणों से है , जिनमें से एक एसएचजी महिलाओं में उद्यमशीलता के गुणों का विकास है। महिलाएं स्वयं सहायता समूहों की मदद से अपना उद्यम शुरू करती हैं जो ऋण, प्रशिक्षण सुविधाएं आदि प्रदान करते हैं और उन्हें अधिक आत्मविश्वास और बाहर जाने वाले बनाते हैं। यह समर्थन, महिलाओं के समग्र विकास के साथ-साथ उनमें उद्यमशीलता के गुणों के विकास की ओर ले जाता है। महिलाएं काम करने के लिए एक साथ आती हैं और टीम वर्क के महत्व को समझती हैं और अपने परिवार की भलाई के लिए पैसा कमाती हैं। वे व्यक्तिगत आधार पर नहीं बल्कि एक समूह के रूप में

कई चीजें हासिल कर सकते हैं। नवीनता एक उद्यमी का एक महत्वपूर्ण गुण है। तथापि , इस गुण को विकसित करने के लिए महिलाओं को प्रशिक्षण एवं विकास सुविधाएं प्रदान की जानी चाहिए। वर्तमान अध्ययन में , अधिकांश महिलाएं स्वयं सहायता समूहों के माध्यम से चपाती भाजी बनाने और खाद्य सामग्री तैयार करने से संबंधित व्यवसाय को प्राथमिकता देती हैं। खाद्य पदार्थ और भोजन बनाना महिलाओं में निर्मित एक गुण है और इसके लिए किसी विशेष प्रकार के प्रशिक्षण की आवश्यकता नहीं होती है। जिन महिलाओं को उनकी वर्तमान आर्थिक स्थिति के कारण कोई वित्तीय सहायता नहीं मिलती है , उन्हें एसएचजी में शामिल होने पर वित्तीय सहायता मिलती है। पहले अपना व्यवसाय शुरू करने के लिए धन प्राप्त करना कठिन था लेकिन अब, SHG के माध्यम से, सूक्ष्म वित्त निधि प्राप्त करना बहुत आसान हो गया है। जो महिलाएं गरीब हैं और अपने जीवन में बहुत सी कठिनाइयों को देखा है , वे अपने बच्चों को एक बेहतर जीवन शैली देने के लिए तैयार हैं और उन्हें पता है कि परिवार के एक सदस्य द्वारा अर्जित आय पर्याप्त नहीं होगी। महिलाएं आर्थिक रूप से अधिक उत्पादक बनने की कोशिश कर रही हैं। दिए गए आंकड़ों से यह भी अनुमान लगाया गया है कि 26 से 35 आयु वर्ग की महिलाएं स्वयं सहायता समूह के व्यवसाय में शामिल होना पसंद करती हैं। यह अनुशंसा की जाती है कि अन्य आयु वर्ग की गरीब महिलाओं को भी स्वयं सहायता समूह में शामिल होने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूचि

1. घोष, एस. (2013) उद्यमितारू श्भारत में ग्रामीण विकास के संदर्भ में मुद्दों और चुनौतियों श् का एक सिंहावलोकन। बिजनेस स्पेक्ट्रम , 1(2) पृष्ठ संख्या 120।
2. सुंदर, के और श्रीनिवासन , टी (2009) श्ग्रामीण औद्योगीकरणरू चुनौतियां और प्रस्तावश्। सामाजिक विज्ञान के जर्नल, 20 (1)रू पृष्ठ संख्या 23- 29।
3. पी. तिवारी और एस.एम. फहद , (2018) भारत में सूक्ष्म वित्त संस्थान , आवास विकास वित्त निगम , रेमन हाउस, मुंबई, 2018।
4. सारंगी, एन. (2017) सूक्ष्म वित्त और ग्रामीण गरीबरू मध्य प्रदेश , भारत में समूह आधारित ऋण कार्यक्रमों का एक अध्ययन। पीएचडी थीसिस , जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली, भारत पृष्ठ 110.
5. सरकार, डी. (2018) भारतीय सूक्ष्म वित्त बांग्लादेश से सबक आर्थिक और राजनीतिक साप्ताहिक , पृष्ठ 18-20।
6. सरुमथी, एस., और मोहन, के. (2019) महिला सशक्तिकरण में सूक्ष्म वित्त की भूमिका ; पांडिचेरी क्षेत्र के ग्रामीण एसएचजी में एक अनुभवजन्य अध्ययन। जर्नल ऑफ मैनेजमेंट एंड साइंस , 1(1), पृष्ठ 1-10.
7. श्मिट, रेइनहार्ड एच. (2020)सूक्ष्म वित्त , व्यावसायीकरण और नैतिकता , गरीबी और सार्वजनिक नीतिरू वॉल्यूम। 2रू आई.एस. 1, अनुच्छेद 6. यहां उपलब्ध हैर पृष्ठ 120.
8. श्राइनर, एम. और कोलंबेट , एच.एच. (2021) अर्जेन्टीना से सूक्ष्म वित्त के लिए शहरी से ग्रामीण पाठ तक। विकास नीति समीक्षा , वॉल्यूम। 19, नंबर 3, पृष्ठ 339-354।
9. ज़ेलर, एम।, और मेयर , आर। एल। (2012)। सूक्ष्म वित्त का त्रिकोण (संख्या 40)। अंतर्राष्ट्रीय खाद्य नीति अनुसंधान संस्थान (आईएफपीआरआई)। पृष्ठ 110.
10. ज़ेलर, मैनफ्रेड और मेयर्स , रिचर्ड (2013),सूक्ष्म वित्त वित्तीय स्थिरता , आउटरीच और प्रभाव का त्रिभुज, जॉन हॉपकिंस यूनिवर्सिटी प्रेस , बाल्टीमोर। पृष्ठ 220.
11. अरस्याद, लिंकोलिन (2015) सूक्ष्म वित्त का आकलन इंस्टीट्यूशन परफॉर्मेंस द इम्पोर्टेंस ऑफ इंस्टीट्यूशनल एनवायरनमेंट , गडजाह माडा इंटरनेशनल जर्नल ऑफ बिजनेस , सितंबर-दिसंबर 2005, वॉल्यूम। 7, नंबर 3, पृष्ठ .391-427।
12. आर्मेंदरिज़ डी अघियोन , बी. और जे. मोर्डच (2020) सूक्ष्म वित्तग्रुप लेंडिंग से परे , इकोनॉमिक्स ऑफ ट्रांजिशन , वॉल्यूम। 8, पृष्ठ . 401-420.
13. सी.आर.कोठारी, (2014) अनुसंधान पद्धति विधि और तकनीक, न्यू एज इंटरनेशनल (पी) लिमिटेड , प्रकाशन नई दिल्ली, एड-2004. पृष्ठ 150.

Corresponding Author

राजेन्द्र प्रसाद पटेल*

शोधार्थी, अवधेश प्रताप सिंह विवि, रीवा (मप्र)